ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in December 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

"प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी वर्तमान युग में प्रासंगिकता"

डॉ० जेहरा बानो, शोध पर्यवेक्षिका, विद्या भवन गोविंदराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय, उदयपुर (राज.)
राम गोपाल जीतरवाल, शोधार्थी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

1 सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में "प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त तथा उसकी वर्तमान युग में प्रासंगिकता" का वर्णन किया गया है। प्लेटो के लिए शिक्षा जीवन की महान चीजों में से एक थी। शिक्षा बुराई को उसके मूल में छूने तथा गलत जीवन जीने के तरीकों के साथ–साथ जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण को सुधारने का एक प्रयास था। शिक्षा का उद्देश्य आत्मा को प्रकाश की ओर मोड़ना है। प्लेटो ने एक बार कहा था कि शिक्षा का मुख्य कार्य आत्मा में ज्ञान डालना नहीं है, बल्कि आत्मा में छिपी प्रतिभा को सही उद्देश्यों की ओर निर्देशित करके उसे बाहर निकालना है। शिक्षा पर प्लेटो की यह व्याख्या उनकी शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालती है और शोधार्थियों को उनके शिक्षा सिद्धांत के निहितार्थों को उजागर करने के लिए उचित दिशा में मार्गदर्शन करती है।[1]

2 प्रस्तावना :

शिक्षा की महत्ता पर विचार करते हुए प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने कहा – ''संसार में सबसे श्रेष्ठ और सुंदर कोई वस्तु यदि है तो वह है शिक्षा।'' शिक्षा का कार्य है व्यक्ति में निहित जन्मजात गुणों का विकास करना, सत्य का ज्ञान कराना तथा आदर्श समाज का निर्माण करना। शिक्षा की प्रकृति सरल, सहज, व्यापक और बहुवर्ती है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो विद्यालय और पुस्तकों तक सीमित नहीं रहती। व्यक्ति जीवन भर कुछ ना कुछ सीखता रहता है। शिक्षा की इस विशेषता में यह भी जोड़ने वाला बिंदु है कि यह विकास की एक प्रक्रिया है जो घर, विद्यालय तथा अन्य स्थानों पर भी संपन्न होती रहती है। विकास की प्रकृति के आधार पर शिक्षा मनुष्य के व्यवहारों और विचारों में परिवर्तन और परिमार्जन करती है।[2]

3 मुख्य शब्दावली :– प्लेटो, शिक्षा, सिद्धांत, प्रासंगिकता।

4 प्लेटो का जीवन परिचय :

प्लेटो अपने समय का महान विद्वान था। एथेंस की सभ्यता प्लेटो के विचारों की देन थी।[3] शिक्षा व राजनीतिक चिंतन में प्लेटो को अमर स्थान प्राप्त है तथा वह आज भी शिक्षाशास्त्रियों व राजनीतिक चिन्तकों का प्रेरणा स्रोत बना हुआ है। इस महान शिक्षाशास्त्री व दार्शनिक का जन्म एक कुलीन परिवार में 427 हिस्सा पूर्व में हुआ। उनके पिता का नाम अरिस्तोन तथा माता का नाम पेरिकतिओन था। प्लेटो का वास्तविक नाम अरिस्तोक्लीज था। लेकिन सुंदर कद–काठी के कारण उसे उसके व्यायाम प्रशिक्षक ने 'प्लाटोन' के नाम से पुकारा करता था। जिसे किसी व्यक्तित्व के सौंदर्य को दर्शाने के लिए प्रयुक्त किया जाता था। यह 'प्लाटोन' शब्द ही बाद में जाकर प्लेटो के रूप में परिवर्तित हो गया तथा बाद में इसी नाम से जाने जानने लगा। इस तरह 'अरिस्तोक्लीज' प्लेटो बन गया। शिक्षा व राजनीतिक चिंतन के जगत में आज वह इसी नाम से जाना पहचाना जाता है।[4]

5 प्लेटो के प्रमुख शैक्षिक विचार :

प्लेटो की दृष्टि से मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति है। अतः शिक्षा का भी अंतिम उद्देश्य यही होना चाहिए कि वह मनुष्य को आत्मानुभूति करने योग्य बनाए। प्लेटो ने इस जगत और उसमें मानव जीवन के व्यावहारिक पक्ष पर भी ध्यान दिया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि राज्य को अपने नागरिकों की उचित शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए। ऐसी शिक्षा कि जिससे वह राष्ट्र के श्रेष्ठ नागरिक बने और नैतिक जीवन जीते हुए अंत में आत्मानुभूति को प्राप्त करें। प्लेटो के प्रमुख शैक्षिक विचारों को निम्नलिखित क्रम और शीर्षकों में संजोया जा सकता है –

- **योग्यता अनुसार व्यक्तियों का निर्माण करना :–** प्लेटो ने स्पष्ट किया है कि प्रत्येक नागरिक राष्ट्र की एक कड़ी होता है, उसकी योग्यता और क्षमता से ही कोई राष्ट्र प्रगति करता है। अतः शिक्षा द्वारा प्रत्येक मनुष्य की योग्यता एवं क्षमता का विकास किया जाना चाहिए। उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि प्रत्येक राज्य को सैनिक, प्रशासक, व्यापारी और सेवक होना चाहिए। प्लेटो की दृष्टि में शरीर से हष्ट पुष्ट व्यक्तियों को सैनिक शिक्षा, बौद्धिक दृष्टि से मध्य व्यक्तियों को व्यापार (उत्पादन एवं क्रय विक्रय) की शिक्षा और बौद्धिक दृष्टि से उत्तम व्यक्तियों को प्रशासन (नीति) की शिक्षा देनी चाहिए।
- **नागरिकों में नैतिकता का विकास करना :–** प्लेटो राष्ट्रभक्त नागरिकों के निर्माण पर बल देते थे। इनका स्पष्ट मत था कि प्रत्येक नागरिक को राज्य द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना चाहिए। इसे ये राज्य नैतिकता कहते थे और राज्य से ये अपेक्षा करते थे कि वह यह नियम राज्य, समाज और व्यक्ति सभी के हितों को सामने रखकर बनाएं। अतः प्लेटो शिक्षा द्वारा राज्य के शासन को चलाने वालों को मानवीय नैतिकता और सामान्य नागरिकों को राज्य नैतिकता की शिक्षा देने पर बल देते थे।
- **नागरिकों में ज्ञान का विकास करना** :– प्लेटो ज्ञान के लिए ज्ञान और मुक्ति के लिए ज्ञान दोनों के पक्षधर थे। ये स्वयं अति ज्ञानी थे। पाश्चात्य जगत में इन्हें ज्ञान का बृहस्पति कहा जाता है। इन्होंने स्वयं ज्ञान का अपने में जो आनंद है, उसकी अनुभूति की थी और ज्ञान के आत्मानुभूति में सहायक होने की अनुभूति भी की थी। इसलिए मनुष्य को भाषा, साहित्य और दर्शन का ज्ञान कराने पर बल देते थे और इसे शिक्षा का एक उद्देश्य मानते थे।
- **नागरिकों में विवेक का विकास करना :–** प्लेटो की दृष्टि से ज्ञान का तब तक कोई महत्व नहीं जब तक उसके द्वारा मनुष्य में विवेक का विकास नहीं किया जाता। उनके अनुसार विवेक व्यक्तिगत विकास और सामाजिक विकास की नींव है। विवेक से ही मनुष्य सत्य–असत्य, अच्छे–बुरे, सुंदर–असुंदर में भेद करता है और इसे ही विरोधी तत्वों में समन्वय करता है।[5]
- **ईश्वर को जानना :–** शिक्षा का यह दायित्व है कि वह बालक को इस योग्य बनाए कि वह ईश्वर के साथ आत्म साक्षात्कार कर सके। इसके लिए उसने बालकों को जीवन के मूल्य की शिक्षा देने पर बल दिया। उनका

मानना था कि इसके लिए बालकों को संसार के वास्तविक स्वरूप की जानकारी दी जाए। वस्तुतः प्लेटो के ये विचार भारतीय दर्शन से मिलते जुलते हैं, क्योंकि भारतीय शिक्षा शास्त्रियों ने मुक्ति अथवा मोक्ष को शिक्षा का अंतिम उद्देश्य स्वीकार किया है।

- **सत्यम्, शिवम् सुंदरम् के प्रति आस्था उत्पन्न करना :–** प्लेटो ने शिक्षा का प्रारंभिक उद्देश्य सत्यम् शिवम् सुंदरम् की भावना का विकास करना माना है। प्लेटो के अनुसार प्रारंभ में ऐसा शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करना चाहिए जिससे बालकों में सुंदरम के प्रति वास्तविकता उत्पन्न हो सके तथा आगे चलकर यह प्रेम सत्यम् एवं सुंदरम् के रूप में विकसित हो सके।
- **व्यक्तित्व का विकास करना :–** प्लेटो के अनुसार शिक्षा का दायित्व बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है। वस्तुतः शिक्षा द्वारा ऐसे जीवन का निर्माण करना चाहिए जो प्रेम का जीवन हो, न्याय का जीवन हो और सौंदर्य का जीवन हो। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए।
- **नागरिकता के गुणों का विकास करना :–** प्लेटो के अनुसार प्रत्येक नागरिक में सहिष्णुता, प्रेम, त्याग, सामूहिक जीवन की भावना, साहस, वीरता आदि गुण भी होने चाहिए। इसके साथ ही उनमें ज्ञान व विवेक भी हो जिससे वह भौतिक इच्छाओं का दास न बने तथा समाज के हितार्थ अपना योगदान दे सके।
- **मानव जीवन में संतुलन स्थापित करना :–** मानव जीवन में अनेकानेक विरोधी तत्व विद्यमान रहते हैं। शिक्षा का लक्ष्य यह होना चाहिए कि बालक इन तत्वों को समझें तथा इनमें संतुलन स्थापित करें। उसमें विरोधी परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता उत्पन्न हो। शिक्षा के द्वारा बालक में पूर्ण आत्मविश्वास का भाव जागृत होना चाहिए।[6]

6 प्लेटो के शैक्षिक सिद्धान्त की वर्तमान युग में प्रासंगिकता :

प्लेटो के शैक्षिक सिद्धान्त का अध्ययन करने के बाद शोधकर्त्ता ने पाया कि इनके विचारों की वर्तमान युग में बहुत उपादेयता व प्रासंगिकता है जिनको निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जाना जा सकता है –

- प्लेटो का शिक्षा सिद्धांत वर्तमान युग में बहुत ही अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को मानव जीवन में सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना और वास्तविकता भी यही है कि 'बिना शिक्षा के मनुष्य पृथ्वी पर एक भार के समान है'।
- शिक्षा को उन्होंने किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखा बल्कि बालकों की शारीरिक, बौद्धिक, चारित्रिक, सामाजिक विकास यानी कि सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान देने की कोशिश की।
- प्लेटो ने ऐसी शिक्षा जो देशहित में उपयोगी न हो उसे व्यर्थ ही माना।
- आज के समय में हम देखते हैं कि सारी दुनिया में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। लोग इसलिए शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं कि इससे उसे अच्छी नौकरी मिल जाए, ज्यादा से ज्यादा धन अर्जन करना अब शिक्षा का उद्देश्य हो गया है। यही कारण है कि शिक्षा का स्तर दिनों–दिन गिरता ही जा रहा है। अतः शिक्षा के व्यवसायीकरण को रोका जाये।
- प्लेटो के अनुसार नैतिक मूल्यों की शिक्षा कम दी जा रही है जिससे समाज में एक अजीब सा माहौल बन गया है। लोग रिश्तों को महत्व देना भूल गए हैं, अपने से बड़ों के लिए जो इज्जत होनी चाहिए वह कहीं नहीं दिखती। संपूर्ण सृष्टि बस स्वार्थ आपस में जुड़ी हुई है। अतः नैतिक मूल्यों की शिक्षा पर जोर दिया जाये।
- ऐसे समय में हमें एक ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो मनुष्य में मनुष्यता का विकास करें और उसे स्वार्थ भरी दुनिया से बाहर निकलने का प्रयास करें। लोगों में देश के लिए प्रेम की भावना विकसित हो। नैतिक मूल्यों का विकास हो। इन सब दृष्टिकोण से अगर हम देखे तो पाते हैं कि प्लेटो की शिक्षण पद्धति आज के समय में कितनी आवश्यक है।
- व्यायाम, संगीत, खेलकूद आदि को शिक्षा में स्थान देकर उन्होंने बालकों के मानसिक और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान देने का प्रयास किया।
- प्लेटो ने महान विचारकों की रचनाओं, शिक्षाओं और विचारों आदि के द्वारा नैतिक शिक्षा देने की बात कहा।
- प्लेटो का यह कथन है कि ''शिक्षा मानसिक रोग का मानसिक उपचार है'' आज भी यह कथन यूनेस्को की प्रस्तावना का आधार बना हुआ है जिसमें लिखा है कि युद्ध मनुष्य के मस्तिष्क में जन्म लेते हैं, यदि शिक्षा द्वारा उनके मस्तिष्क में शांति स्थापित कर दी जाए तो स्थायी अंतरराष्ट्रीय शांति की स्थापना संभव है।
- उनका शिक्षा सिद्धांत हमें बताता है कि एक शिक्षित शासक ही देश की शासन व्यवस्था का उचित संचालन कर सकता है।
- 'दार्शनिक शासक' की कल्पना कर शासन में उचित शिक्षा का कितना अधिक महत्व है, इससे उन्होंने दुनिया को रूबरू कराने का प्रयास किया जिसे अपनाने की आवश्यकता आज संपूर्ण विश्व को है।
- इसके अलावा उन्होंने नारी शिक्षा को भी अत्यधिक प्रोत्साहन दिया। वो भी उस समय में जब नारियों को बहुत ही ज्यादा पर्दे में रखा जाता था। नारियों की शिक्षा की बात कोई सोचता भी नहीं था। ऐसे में नारियों को 'समानता की शिक्षा' दिलाने के प्लेटो के प्रयास को हमेशा याद किया जाएगा। यह उनके प्रयास का ही प्रतिफल है कि आज विश्व के लगभग सभी देशों में महिलाओं को बराबरी का अधिकार प्राप्त है।
- प्लेटो का यह कहना सत्य ही जान पड़ता है कि समाज में शिक्षा द्वारा ही न्याय की स्थापना की जा सकती है।[7]
- प्लेटो के द्वारा किए गए समाज सुधार कार्यों जैसे– स्त्री शिक्षा, राष्ट्रवाद, जन शिक्षा आदि कार्य वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं तथा आज भी उनकी बहुत आवश्यकता है।

- ❖ बाल गंगाधर तिलक का मानना था कि वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम में आदर्शों, परंपराओं तथा नैतिक मूल्य को स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में इन मूल्यों का पतन होता जा रहा है।
- ❖ तिलक ने शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है।

निष्कर्ष :

प्लेटो के शिक्षा सिद्धान्त का वास्तविक लक्ष्य नागरिक गुणों को विकसित करना है। प्लेटो ने शैक्षिक पाठ्यक्रम को इस प्रकार से व्यवस्थित किया है कि नागरिकों को नैतिक तथा उदार शिक्षा प्रदान की जा सके, ताकि उनका मस्तिष्क इस प्रकार से तैयार हो सके कि वे न्यायप्रिय एवं उत्तरदायित्व के साथ जनहित के कार्यो को कर सके। प्लेटो का मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही नागरिकों में अधिकार एवं कर्त्तव्य की भावनाओं को विकसित किया जा सके।[8]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. www.yourarticlelibrary.com
2. डॉ. एन. पी. सिंह, ''शिक्षा के दार्शनिक आधार'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2008, पृष्ठ संख्या 2–3
3. डॉ.भटनागर ए.बी., डॉ. भटनागर अनुराग, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण 2014, पृ.सं. 258
4. मेहता जीवन, "पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तक" साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि., आगरा, संस्करण 2007, पृ.सं. 1,2.
5. डॉ. परवीन आबिदा, डॉ. सोलंकी रविबाला, मदेशिया प्रमोद कुमार, ''ज्ञान एवं पाठयक्रम'' ठाकुर पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर,संस्करण 2017, पृ.सं. 153,154
6. लाल एवं तोमर ''विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, संस्करण प्रथम 2004, पृ.सं. 18–21
7. www.hindi.pratilipi.com